# Kamakhya Mantra and Sadhana Vidhi

**Shri Yogeshwaranand Ji**
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

## कामाख्या-साधना

साधना के इस क्रम में यंहा मैं भगवती कामाख्या की साधना का उल्लेख कर रहा हूँ।

कौल-मार्ग शाक्त मार्ग है। यद्यपि शिव और शक्ति सर्वथा अभिन्न हैं, लेकिन कौलाचारी शक्ति तत्व को प्रधान मानते हैं। मूल रूप से यद्यपि शक्ति एक ही है, किन्तु भिन्न-भिन्न काल में अलग-अलग रूप में अलग-अलग उद्देश्य से अवतरित होने के कारण उसके रूप और नाम अलग-अलग हैं। मां कामाख्या, काली और तारा का मिश्रित स्वरूप माना जाता है। कुछ विद्वान इसे मां षोडशी का स्वरूप भी मानते है।। चारों प्रकार की वाणियों में भगवती कामाख्या परावाक् हैं। काली, तारा और षोडशी की गणना दश महाविद्याओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर मानी जाती हैं, जिनका मिश्रित स्वरूप भगवती कामाख्या हैं।

**साधना-विधि** :- सर्वप्रथम आचमन आदि करके दांये हाथ में जल लेकर विनियोग करें-

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, कामाख्या देवता सर्वसिद्धये जपे विनियोगः।**

इसके उपरान्त न्यास आदि करें-

कर-न्यासः-
ॐ त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ त्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ त्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ त्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रः कामाख्यै नमः।

हृदयादि-न्यासः-
ॐ त्रां हृदयाय नमः।
ॐ त्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ त्रूं शिखायै वषट्।
ॐ त्रौं कवचाय हुं।
ॐ त्रैं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ त्रः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त भगवती कामाख्या का ध्यान करेंः-

## ध्यान

रक्त-वस्त्रां वरोद्-युक्तां सिन्दूर-तिलकान्विताम्।
निष्कलंक सुधा-धाम-वदन-कमलोज्ज्वलाम्।।१।।
स्वर्णादिन-मणि-माणिक्य-भूषणै-र्भूषितां पराम्।
नाना-रत्नादि-निर्माण-सिंहासनोपरि-स्थिताम्।।२।।
हास्य-वक्त्रां पद्म-राग-मणि-कान्तिमनुत्तमाम्।
पीनोत्तुंग-कुचां कृष्यां श्रुति-मूल-गते-क्षणाम्।।३।।
कटाक्षैश्च महा-सम्पद्-दायिनीं परमेश्वरीम्।
सर्वांग-सुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्।।४।।

डाकिनी-योगिनी-विद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
कामिनी-भिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगन्धिताम्।।५।।
ताम्बूलादि-कराभिश्च नायिका-भिर्विराजिताम्।
समस्त-सिद्ध-वर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्।।६।।
त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्प-चापेषु बिभ्रतीम्।
भग-लिंग-समाख्यानं किन्नरीभ्योऽपि श्रृण्वतीम्।।७।।
वाणी-लक्ष्मी-सुधा-वाक्य-प्रति-वाक्य-महोत्सुकाम्।
अशेष-गुण-सम्पन्नां करूणा-सागरां शिवाम्।।८।।

उपरोक्त ध्यान करने के उपरान्त भगवती कामाख्या के मूल मंत्र त्रीं त्रीं त्रीं का यथाशक्ति जप करें। यदि भगवती का पूजनोपचार करना हो तो उन्हें कुंकुम, लाल फूल, सुगंधि, गुडहल के फूल, सिंदूर और मुख्य रूप से कनेर के पुष्प अर्पित करें।

मंत्रोद्धारः-

जृम्भणान्तं त्यक्तपाशं यात्रावारणरोहकम्।
वामकर्णयुतं देवि नादबिन्दुयुतं पुनः।।
एतत्तु त्रिगुणीकृत्य कल्पवृक्षमनुं जपेत्।
एकं वापि द्वयं वापि त्रयं वा जपेत् सुधी।।

अर्थातः- हे देवि! जृम्भणान्त अर्थात्-''त''।
त्यक्तपाश अर्थात्-''अ'' से रहित। (त्)
यात्रावारण अर्थात-''र''।
रोहक अर्थात्-''युक्त''
वामकर्ण अर्थात्-''ई''।
नादविन्दु अर्थात्- ''ँ''।

उपरोक्त स्पष्टीकरण से जो शब्द निकलकर आता है, वह बनता है- ''त्रीं'' । कल्पवृक्ष के समान इस मंत्र का जप करना चाहिए। इस कल्पवृक्ष को तीन गुना कर, अर्थात्- ''त्रीं त्रीं त्रीं'' की एक माला, दो

माला, तीन माला अथवा चाहे जितनी बार जप करें। इनकी साधना में न तो चक्रशुद्धि की आवश्यकता है, न काल-शोधन की।

जप करने के उपरान्त अपने जप भगवती को समर्पित करें।

..............................

## कुछ विशिष्ट जानने योग्य तथ्य

1. भक्ति बड़ी चीज हैः- अनुभव में आया है कि बहुत से साधकों को अभिमान हो जाता है कि वे मां काली के उपासक हैं, अथवा अन्य किसी देवता के उपासक हैं और वे किसी का भी अहित करने में सक्षम हैं। वे बहुत उच्च शक्ति के उपासक हैं अथवा उन्होंने अपने इष्ट देवता के बहुत अधिक संख्या में जप कर लिये हैं और वे सदैव अपराजित रहेंगें। यह सब सम्भव है, लेकिन यदि सामने वाला व्यक्ति किसी अन्य देवता या देवी का उपासक है और उसमें त्याग, सत्यता, शुद्धता, श्रद्धा और अपने देवता के प्रति अनन्य विश्वास और समर्पण भावना है, अंहकार की उपस्थिति उसमें तनिक भी नहीं है तो हो सकता है कि आपके प्रयोगों के द्वारा वह कुछ समय के लिए तो परेशान हो जायेगा, लेकिन कुछ समय पर्यन्त ही उसका सब कुछ ठीक हो जायेगा और घमंडी उपासक को निश्चय ही अपमानित होना पड़ेगा। इस लिए यदि आप साधक हैं तो समस्त गुण अपने आप में लाईये, तभी आपका सफल होना सम्भव है। त्याग, तपस्या, भक्ति, अंहकारहीन, सत्यवादी, तपश्चर्या का पालन करना ही एक साधक का धर्म है। आपने साधना, तपस्या तो बहुत की, लेकिन व्यर्थ में ही उसे लुटा दिया तो एक समय आपको ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा, जब आप सामान्य व्यक्ति से भी पराजित हो

जायेंगें। और इस समय का सामना करना स्वयं में ही अपमृत्यु के समान है।

2. जब अवांछित दुर्घटनाएं बार-बार होती हों, अचानक ही व्यक्ति कर्ज, असाध्य बीमारी, अनायास ही नुकसान पर नुकसान, लम्बे समय से चली आ रही विपत्तियों का अन्त न होना, ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति यह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है कि मेरे घर, व्यवसायिक प्रतिष्ठान आदि पर कोई गलत आत्मा का साया तो नहीं है, अथवा किसी दुश्मन के द्वारा कोई जादू-टोना तो नहीं कर दिया गया है, किसी के द्वारा मूठ तो नहीं चला दी गयी है अथवा किसी के द्वारा कोई अघोरी या श्मशानिक प्रयोग तो नहीं कर दिया अथवा करा दिया गया है। या फिर कालसर्प दोष, पितृ दोष या फिर किसी ग्रह का दोष या परिवार की किसी अतृप्त आत्मा का दोष तो नहीं है। वह बार-बार किसी पंडित, मौलवी या फिर किसी तांत्रिक की खोज में भटकता है और अपना बहुमूल्य समय और धन लुटाता है। यदि किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार की समस्या हो तो सर्वप्रथम निम्नाकित तथ्यों पर विचार करें-

- बहुत से प्रयोग इस प्रकार के होते हैं कि उनका करीब १०० सालों तक भी प्रभाव रहता है। यह मेरा अपना अनुभव है कि अनेक परिवार ऐसे हैं, जिनके पुरखों पर किया गया अभिचार कर्म ५०-६० साल पुराना है, जो आज भी उनका नाश कर रहा है।

- शत्रुतावश किसी का वंश बांध दिया जाता है, या फिर किसी परिवार को शाप होता है। इस स्थिति में होता यह है कि पारिवार में संतान ही नहीं होती। यदि होती भी है तो वह किसी असाध्य बीमारी से पीडित रहती है। अथवा घर में

कोई व्यक्ति असाध्य बीमारी से पीडित रहता है। उस घर का मुखिया ऋण, अर्थहानि, रोग के कारण इतना अधिक पीडित हो जाता है कि वह धर्म, कर्म आदि के लिए स्वयं को तैयार ही नहीं कर पाता है।

- यदि मृतक व्यक्ति की मुक्ति हेतु कोई कर्म किया जाता है तो जिस आत्मा के प्रभाव के कारण उसकी मृत्यु हुई है, वह उस कर्म को रोक देगी और आपके द्वारा मुक्ति हेतु किये गये किसी प्रयोग का फल मृतक व्यक्ति को नहीं मिल पायेगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को स्वयं ही नित्यप्रति उच्च कोटि की शक्तियों के पाठ आदि के लिए २-३ घंटों का समय लगाना होगा।
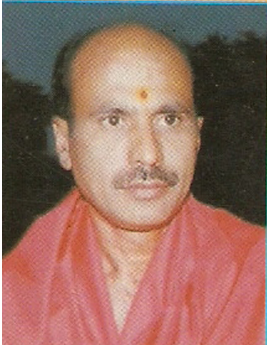
Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info


My dear readers! Very soon I am going to start an Free of Cost E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara.

Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

**1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**
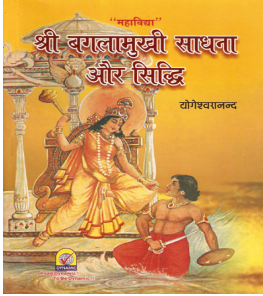
2. **Mantra Sadhna**
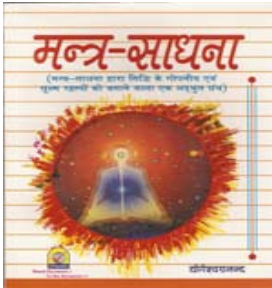
3. **Shodashi Mahavidya** (Tripura Sundari Sri Vidya Lalita Sri Yantra Puja)